जैन ऐजुकेशन बोर्ड प्रस्तुति

LOOK n LEARN

करनी का फल

Rs. 20.00

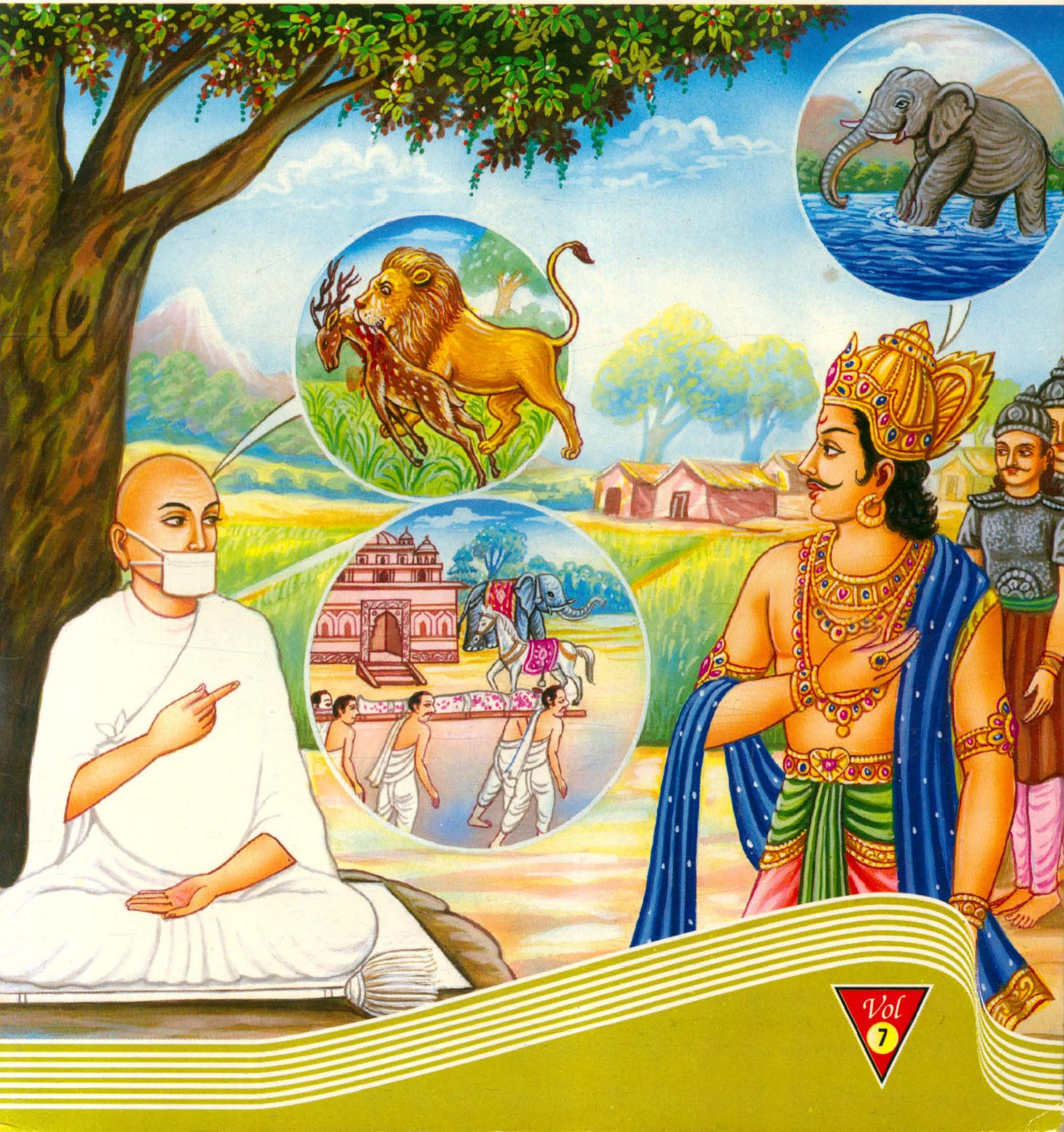

Vol 7

युवा हृदय सम्राट पूज्य गुरुदेव श्री नम्रमुनिजी म.सा. की प्रेरणा...

अर्हम युवा ग्रुप

ARHAM YUVA GROUP

पस्ती द्वारा परोपकार के कार्य...

एक नया प्रयोग...

ARHAM YUVA GROUP

करुणा के सागर पूज्य गुरुदेव... जिनके हृदय में दूसरों के हित, श्रेय और कल्याण की भावना रही है... उनके चिंतन से एक अभिनव विचार का सृजन हुआ और उन्होने मानवसेवा, जीवदया के कार्य के साथ अध्यात्म साधना करने के लिए ''अर्हम युवा ग्रुप'' की स्थापना की..!

पूज्य गुरुदेव के प्यार से प्रेरणा पाकर यह महा अभियान समस्त मुंबई के युवक-युवतीओं का एक मिशन बन गया ! इस महा अभियान में प्रतिदिन स्वेच्छा से नये नये युवक युवतियाँ जुडते जा रहे हैं। यह उत्साही युवावर्ग हर माह हजारों किलो की पस्ती एकत्र करके उसका विक्रय करता है और उस राशी से परोपकार के कार्य करता है ।

पूज्य गुरुदेव के मार्गदर्शन और निर्देशन के अनुसार ये युवक-युवतीयाँ हर माह के प्रथम रविवार को पार्टी, पिक्चर या प्रमाद करने के स्थान पर परमात्मा पार्श्वनाथ की जप साधना करके मनकी शांति और समाधि प्राप्त करते हैं।

दूसरे रविवार को सेवा का कार्य करने के लिए घर-घर जाकर अखबारों की पस्ती इकट्ठी करते हैं और कड़वे-मीठे अनुभव द्वारा अपने अहम् को चूर कर, Ego को Go कर, सहनशील और विनम्र बनते हैं ।

तीसरे रविवार को पस्ती से पाये गये रूपयो से गरीब, आदिवासी, बीमार, अपंग, अंधे, वृद्ध आदि की जरूरत पूरी करते है । वे उन्हें केवल वस्तुयें या अनाज, दवा आदि ही नहीं देते अपितु उन्हें प्यार, सांत्वना आश्वासन और आदर भी देते हैं । उनकी दर्दभरी बातें सुनते हैं, अनाथ बच्चों के साथ खेलते हैं और वृद्धजनों को व्हीलचेर पर बैठाकर उनकी इच्छानुसार प्रभु दर्शन आदि कराने भी ले जाते हैं । वे कत्लखाने जाते हुए पशुओं को बचाते हैं । बीमार, घायल पशु-पक्षीयों का इलाज भी कराते हैं ।

बदले में उन्हें क्या मिलता है ? उन्हें एक प्रकार का आत्मसंतोष प्राप्त होता है । वे जो अनुभव करते हैं उसके लिए कोइ शब्द ही नही है । उनका दिल अनुकंपा से भर उठता है।

इन युवाओं ने आजतक दुनिया के सिक्के का सिर्फ एक ही पहलू-सुख ही देखा था । अब सिक्के का दूसरा पहलू दुनिया का दुःख, वास्तविकता देखने के बाद उन्हें अपना सुख अनंत गुना बड़ा लगने लगा है ।

बस ! पूज्य गुरुदेव ने आज की युवा पीढ़ी को शब्दों द्वारा समझाने के बदले प्रयोग द्वारा उनका जीवन परिवर्तन कर दिया । प्रयोग और प्रत्यक्ष देखने और अनुभूति करने के बाद समझाने की जरूरत ही नहीं रही।

चौथे रविवार को अपने पूज्य गुरुदेव के दर्शन करके, उनके सानिध्यमें उनके शुक्ल परमाणुओं द्वारा अपनी ओरा, अपने भाव और अपने विचारों को शुद्ध करके शांतिपूर्ण, निर्विघ्न अपने सारे कार्य सफल करतें हैं और नया मार्गदर्शन... नया बोध... नये विचार पाकर अपना जीवन धन्य बनाते हैं ।

आप भी जीवन में 'गुरु' द्वारा प्रेरणा पाकर परोपकार के इस महा अभियान में अपना सहयोग देवें और अपना अमूल्य मानव जीवन सफल बनायें।

अर्हम ग्रुप के सदस्य बनने के लिए सम्पर्क करें -

Ritesh - 9869257089, Chetan - 9821106360, Jai - 9820155598

हमारा संदेश...

ज्ञान... ज्ञान के बिना जीवन अधूरा है ।

बच्चों के लिए ज्ञान प्राप्ति का सरल माध्यम है आकर्षक और रंगीन चित्र... बच्चे जो देखते हैं वही उनके मानस मे अंकित हो जाता है और लम्बे अर्से तक याद भी रहता है ।

दूसरी बात... आज के Fast युग में बच्चों के पास पढ़ाई के अलावा इतनी साईड एक्टीवीटी है कि उन्हें लम्बी कहानियाँ और बड़ी बड़ी पुस्तकें पढ़ने का समय ही नहीं है ।

हमारे जैनधर्म मे... भगवान महावीर के आगमशास्त्रो में ज्ञान का विशाल भंडार भरा हुआ है । ज्ञाताधर्मकथा सूत्र जैसे आगम में कथानक के रूप में भी कहानियों का खजाना है ।

बाल मनोविज्ञान की जानकारी से हमे ज्ञात हुआ कि बच्चों की रूचि Comics में ज्यादा है । उन्हें पंचतंत्र, रीचीरीच, आर्ची, Tinkle आदि Comics ज्यादा पसंद है और उसे वे दो-चार - पाँच बार भी पढ़ते है और Comics एक ऐसा Addiction है जिसे बड़े भी एक बार अवश्य पढ़ते है । यही विषय पर चिंतन-मनन करते हुए हमारे मानस में भी एक विचार आया... क्यों न हम भी जैनधर्म के ज्ञान को... हमारे भगवान महावीर के जीवन को, हमारे तीर्थंकर को... बच्चों तक पहुँचाने के लिए Comics Book का माध्यम पसंद करे...?

शायद यही माध्यम से बच्चों और बच्चों के साथ बड़े भी जैनधर्म के ज्ञान-विज्ञान की जानकारी पाकर अपने आप में कुछ परिवर्तन लायेंगे ।

परमात्मा के विशाल ज्ञान सागर में से यदि हम कुछ बूंदे भी लोगों तक पहुँचाने में सफल हुए तो हमारा यह प्रयास यथार्थ है ।

जैनधर्म की क्षमा, वीरता, साहस, मैत्री, वैराग्य, बुद्धि, चातुर्य आदि विषयों की शिक्षाप्रद कहानियाँ भावनात्मक रंगीन चित्रों के माध्यम द्वारा प्रकाशित करने का सदभाग्य ही हमारी प्रसन्नता है ।

यह *Comics* हमारे *Jain Education Board - Look n Learn* के अंतर्गत प्रकाशित हो रही है ।

प्रस्तावना

जैन परम्परा में त्रैसठ शलाका पुरुष प्रसिद्ध है। शलाका पुरुष का अर्थ है अँगुलियों पर गिने जाने वाला प्रभावक व्यक्तित्व। आज की भाषा में अतिविशिष्ट पुरुष। जिनका प्रभावक व्यक्तित्व बल-पौरुष-शक्ति शौर्य-ज्ञान एवं ऐश्वर्य आदि सभी दृष्टि से अद्वितीय हो। २४ तीर्थंकर, १२ चक्रवर्ती, ९ बलदेव, ९ वासुदेव और ९ प्रति वासुदेव कुल ६३ शलाका पुरुष एक अवसर्पिणी काल में होते हैं। इस युग के १२ चक्रवर्तियों में आदीश्वर पुत्र भरत प्रथम और ब्रह्मदत्त बारहवाँ अन्तिम चक्रवर्ती हुए। ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती का समय भगवान अरिष्टनेमि के निर्वाण पश्चात् (महाभारत काल के बाद) और भगवान पार्श्वनाथ के जन्म से पूर्व मध्यकाल में माना जाता है। अर्थात् ईस्वी पूर्व ४०० से पूर्व किसी समय में ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की शासन स्थिति संभव है।

ब्रह्मदत्त का जीवन बहुत ही उथल-पुथल युक्त रहा है। एक ओर उसके जीवन में आशंका, भय, पीड़ा और कष्ट की अँधेरी अमावस छाई है, तो दूसरी ओर षट्खण्ड चक्रवर्ती साम्राज्य के भोग-ऐश्वर्य की चटक चांदनी छितराई हुई दीखती है। उत्तराध्ययनसूत्र में उसके पूर्व जन्मों की कथा-चित्त-संभूत नाम से एक रोचक शिक्षाप्रद और अत्यन्त संवेदनशील चरित्र के रूप में वर्णित है। बड़े भाई चित्तमुनि वैराग्य और ज्ञान से भरी बातें सुनाकर चक्रवर्ती को भोगों से विरक्त होने की प्रेरणा देते हैं। किन्तु ब्रह्मदत्त जीवन एवं वैभव की क्षणभंगुरता को समझते हुए भी दलदल में फँसे हाथी की तरह उनसे छूटने में अपनी असमर्थता बताता है। अन्त में भोगासक्ति और प्रतिहिंसा की भावना से ग्रस्त चक्रवर्ती बड़ी दयनीय मृत्यु को प्राप्त होता है।

प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान

LOOK n LEARN

Jain Education Board

मूल्य : २०/- रु.

PARASDHAM
Vallabh Baug Lane, Tilak Road, Ghatkopar (E),
Mumbai - 400 077. Tel : 32043232.

करनी का फल

कम्पिलपुर के राजा ब्रह्म और रानी चुलनी के एक तेजस्वी पुत्र था ब्रह्मदत्त। राजा ब्रह्म के चार घनिष्ट मित्र थे—काशी का राजा कटक, हस्तिनापुर का कणेरुदत्त, कौशल नरेश—दीर्घराज और चम्पापति-पुष्पचूल।

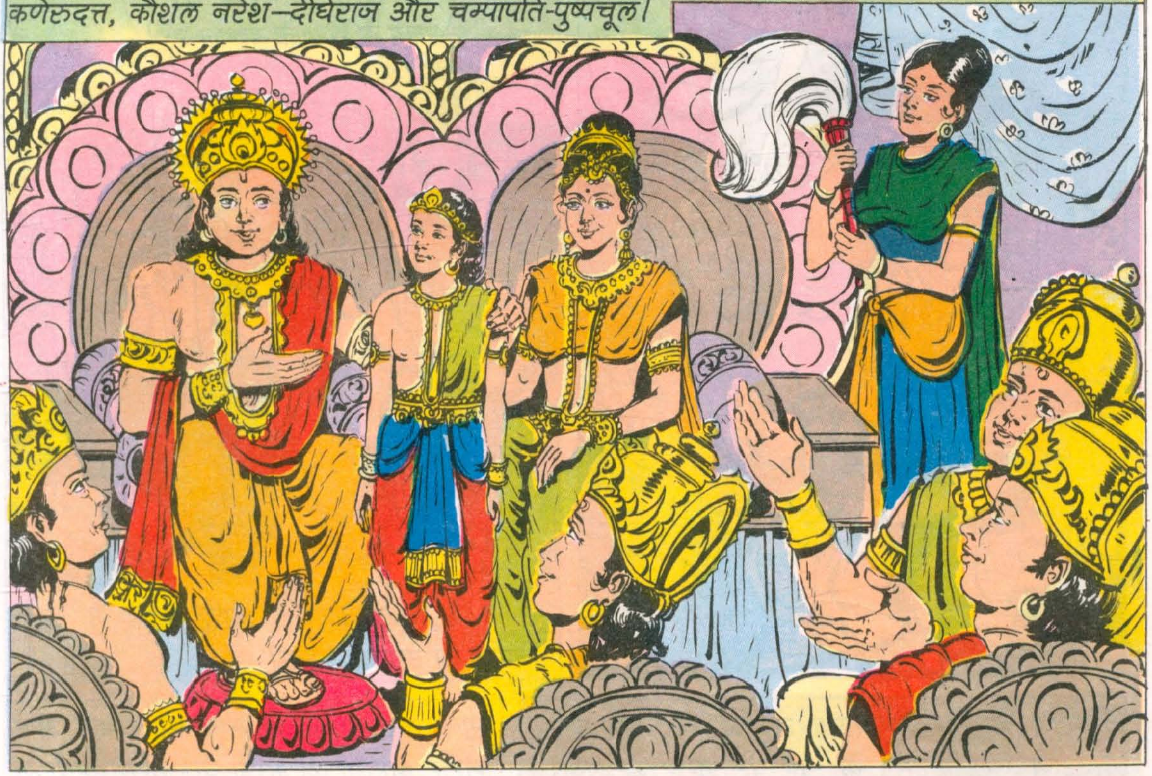

एक बार ब्रह्म राजा बीमार पड़े। वैद्यों ने बहुत उपचार किये परन्तु बच नहीं सके। चारों मित्र राजाओं ने मिलकर ब्रह्मराजा का अन्त्येष्टि संस्कार किया। शोक निवृत्ति के बाद वे आपस में विचार करने लगे।

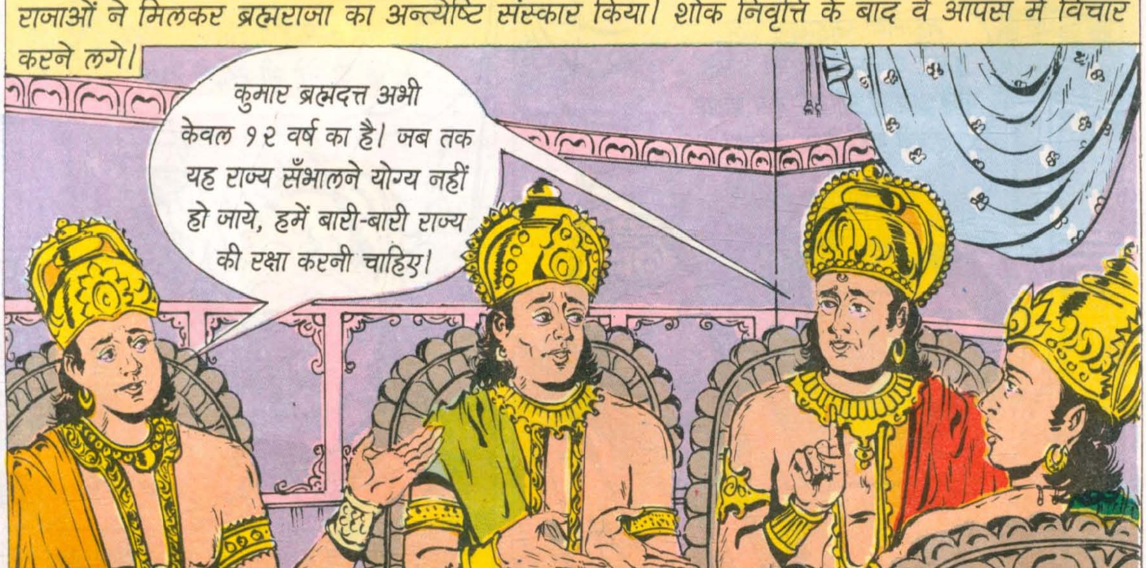

मित्र के लिए इतना तो हमें करना ही चाहिए। हम तैयार हैं।
राजा कणेरुदत्त ने सुझाव दिया–
सर्वप्रथम कौशल नरेश दीर्घराज एक वर्ष के लिए राज्य के संरक्षक बनकर रहें।
राज्य के मंत्री-सेनापति आदि सभी ने इस निर्णय का स्वागत किया।
दीर्घराज ने राज्य व्यवस्था सँभाल ली। धीरे-धीरे दीर्घराज चुलनी रानी के रूप पर मुग्ध हो गया। एक दिन उसने रानी से कहा–
महारानी, महाराज ब्रह्म हमारे घनिष्ट मित्र थे। उनके पीछे अब मैं आपको इस प्रकार दुःखी नहीं देख सकता।
रानी चुलनी भी स्वभाव से चंचल और शरीर वासना की भूखी थी। उसने दीर्घराज को उत्तर दिया–
जब आप इस राज्य के स्वामी हैं तो मेरे भी स्वामी हुए ....
दीर्घराज ने चुलनी रानी को अपनी वासना के जाल में फँसा लिया।

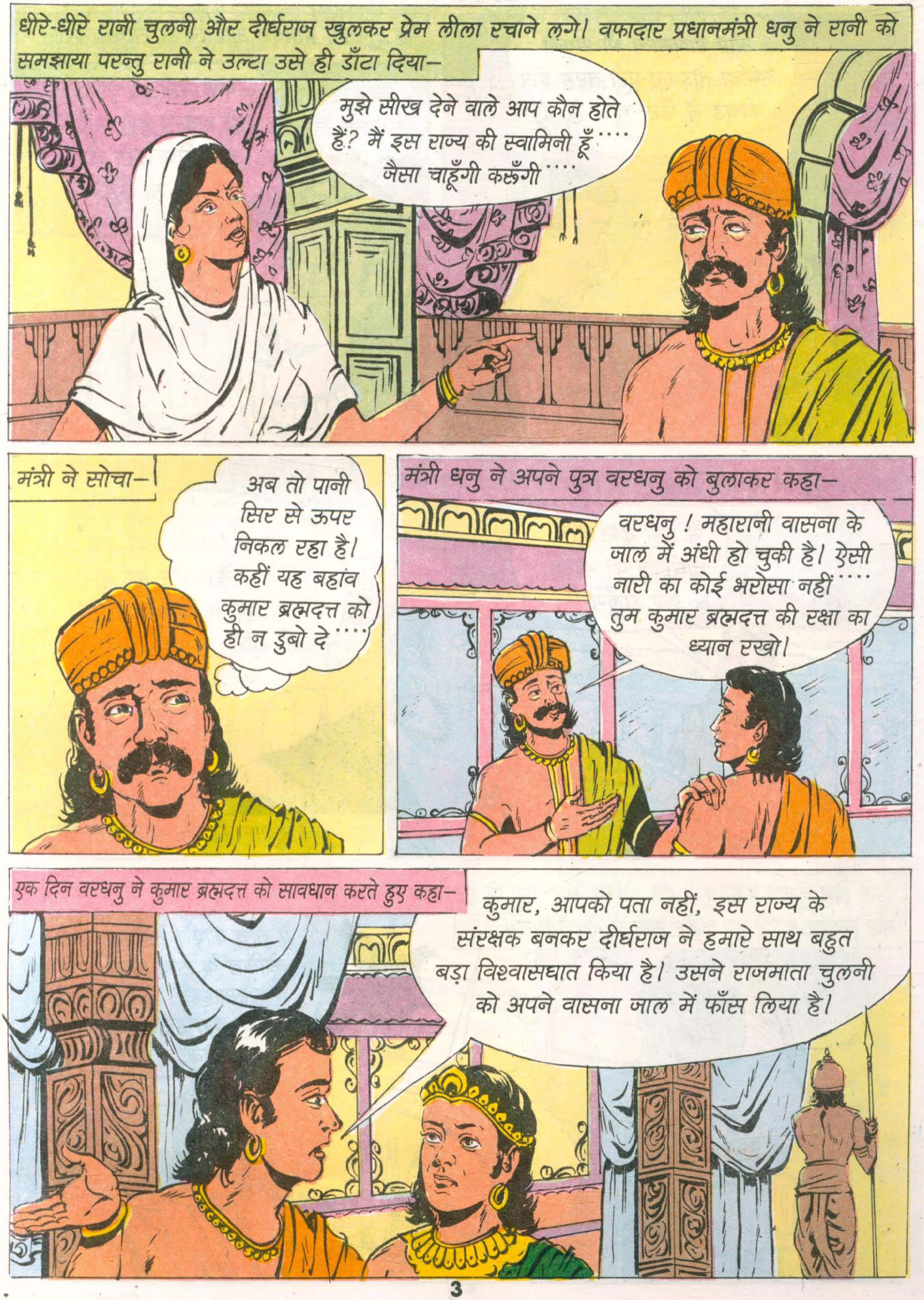
धीरे-धीरे रानी चुलनी और दीर्घराज खुलकर प्रेम लीला रचाने लगे। वफादार प्रधानमंत्री धनु ने रानी को समझाया परन्तु रानी ने उल्टा उसे ही डाँटा दिया–
मुझे सीख देने वाले आप कौन होते हैं? मैं इस राज्य की स्वामिनी हूँ.... जैसा चाहूँगी करूँगी....
मंत्री ने सोचा–
अब तो पानी सिर से ऊपर निकल रहा है। कहीं यह बहांव कुमार ब्रह्मदत्त को ही न डुबो दे....
मंत्री धनु ने अपने पुत्र वरधनु को बुलाकर कहा–
वरधनु ! महारानी वासना के जाल में अंधी हो चुकी है। ऐसी नारी का कोई भरोसा नहीं.... तुम कुमार ब्रह्मदत्त की रक्षा का ध्यान रखो।
एक दिन वरधनु ने कुमार ब्रह्मदत्त को सावधान करते हुए कहा–
कुमार, आपको पता नहीं, इस राज्य के संरक्षक बनकर दीर्घराज ने हमारे साथ बहुत बड़ा विश्वासघात किया है। उसने राजमाता चुलनी को अपने वासना जाल में फँस लिया है।

और राजमाता भी अपनी मर्यादा तोड़कर पूरी तरह इस कीचड़ में फँस चुकी है....
यह सुनकर ब्रह्मदत्त आश्चर्य से सोचने लगा-
क्या मेरी माँ ऐसी हो सकती है? ऐसी दुश्चरित्र नारी को क्या मैं माँ कहूं?
सोचते-सोचते कुमार ब्रह्मदत्त को क्रोध आ गया। वह बोला-
मैं उस दुष्ट नीच दीर्घराज को खत्म कर डालूँगा।
कुमार ! अभी आप उम्र में छोटे हैं। और वह दुष्ट बड़ा धूर्त व शक्तिशाली है। उसे शक्ति से नहीं, युक्ति से जीतना चाहिए।
वरधनु ने कुमार को एक योजना समझाई।
दूसरे दिन कुमार ब्रह्मदत्त ने एक कोकिल और कौए को एक साथ बाँधकर दीर्घराज के शयन कक्ष के बाहर टाँग दिया और तलवार घुमाते हुए कठोर स्वर में बोलने लगा-
ऐ नीच कौए ! तेरी यह धृष्टता ! कोकिल के साथ क्रीड़ा करने का दुःस्साहस ! देख मेरी यह तलवार तुझे इस दुष्टता का दण्ड देकर रहेगी...

कुमार की यह हरकत देखकर दीर्घराज सहम गया। उसने रानी से कहा–
देखा प्रिये ! तुम्हारा बेटा मुझे कौआ और तुम्हें कोकिल बताकर मारने की धमकी दे रहा है....
रानी ने हँसकर बात टाल दी–
प्रिय ! यह अभी बालक है। प्रेम-लीला को क्या समझे ! इससे डरने की जरूरत नहीं है।
परन्तु कुमार की इस आक्रोश पूर्ण उक्ति से दीर्घराज डर गया था। उसने चुलनी से कहा–
प्रिये ! तुम्हारे पुत्र की यह धमकी केवल बाल-लीला नहीं है.... इसके भीतर प्रतिशोध की ज्वालाएँ भभक रही हैं। कुछ उपाय सोचो....
हमारे प्रेम में बाधक बनने वाला चाहे पुत्र हो या मित्र, वह काला नाग है, इसका फन कुचल डालिए....
इसे यों मारने से तो प्रजा में विद्रोह फूट पड़ेगा....
फिर क्या करें ! कैसे इसको खत्म करेंगे?

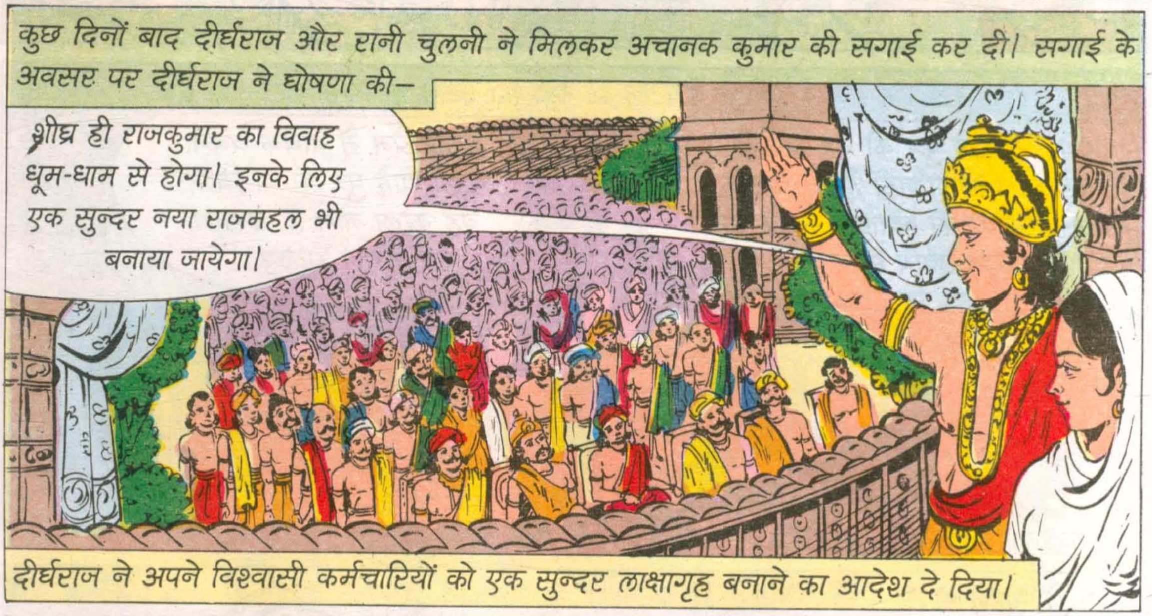

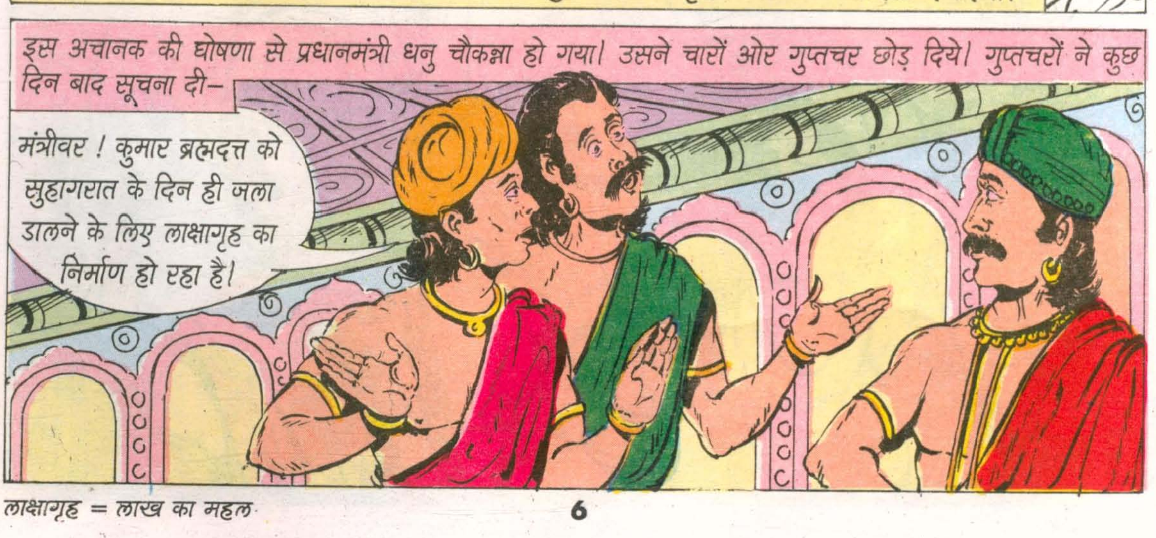

लाक्षागृह = लाख का महल

महामंत्री ने अपने पुत्र वरधनु को बुलाकर सारी बात बताई और कहा–
तुम छाया की तरह हर समय कुमार के साथ रहोगे हर आने वाले खतरे से तुम उसकी रक्षा करोगे।
पिताजी ! आप निश्चिन्त रहें। राजकुमार की रक्षा करना हमारा राजधर्म है।
कुछ दिन बाद महामंत्री धनु ने दीर्घराज से अनुरोध किया–
महाराज ! मैं अब वृद्ध हो गया हूँ। इसलिए निवृत्त होकर गंगा तट पर यज्ञ, पूजा-पाठ आदि धार्मिक कार्य करके जीवन को सफल बनाना चाहता हूँ।
जैसी आपकी इच्छा मंत्रीवर।
दीर्घराज भी महामंत्री के चले जाने से निश्चिन्त हो गया।
मंत्री धनु ने गंगातट पर एक विशाल यज्ञ मण्डप का निर्माण करवाया। जहाँ दिन भर दानशाला चलती रहती और रात को सुरंग का निर्माण होता था। शीघ्र ही यज्ञ मण्डप से लाक्षागृह तक एक गुप्त सुरंग बनकर तैयार हो गई।

इधर एक शुभमुहूर्त में ब्रह्मदत्त का विवाह हो गया। धूम-धाम से वर-वधू ने लाक्षागृह में प्रवेश किया। आधी रात के समय अचानक लाक्षागृह में धू-धू कर अग्नि-ज्वालाएँ भड़क उठी। चारों तरफ हाहाकार मच गया।
कुमार भीतर हैं उन्हें बचाओ।
अरे ! महल में आग लग गई।
वरधनु ने कुमार को पहले ही सावधान कर दिया था। मौका पाकर दोनों सुरंग के रास्ते बाहर निकलकर यज्ञ-मण्डप में आ पहुँचे। वहाँ से घोड़ों पर चढ़कर जंगलों में निकल पड़े।
इधर सेवकों ने महल में खोजबीन करके दीर्घराज को बताया–
महाराज !' महल में केवल नववधू का ही जला हुआ शव मिला है। राजकुमार का कुछ पता नहीं चल रहा है।
धूर्त दीर्घराज समझ गया ब्रह्मदत्त बचकर कहीं भाग गया है। उसने सेवकों को आदेश दिया–
चप्पा-चप्पा छान डालो। राजकुमार जहाँ भी मिले पकड़कर मेरे सामने लाओ।

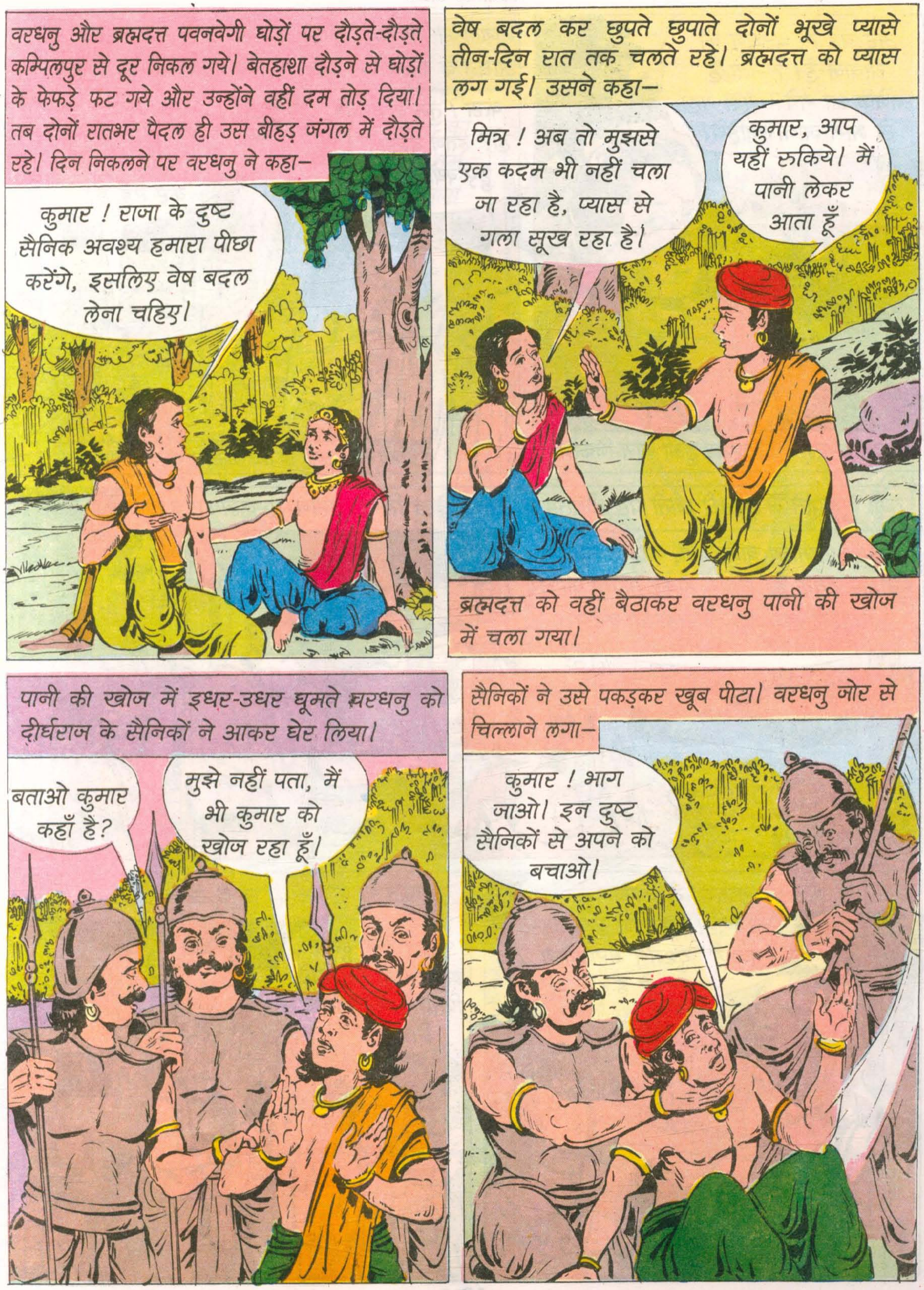
वरधनु और ब्रह्मदत्त पवनवेगी घोड़ों पर दौड़ते-दौड़ते कम्पिलपुर से दूर निकल गये। बेतहाशा दौड़ने से घोड़ों के फेफड़े फट गये और उन्होंने वहीं दम तोड़ दिया। तब दोनों रातभर पैदल ही उस बीहड़ जंगल में दौड़ते रहे। दिन निकलने पर वरधनु ने कहा—
कुमार ! राजा के दुष्ट सैनिक अवश्य हमारा पीछा करेंगे, इसलिए वेष बदल लेना चहिए।
वेष बदल कर छुपते छुपाते दोनों भूखे प्यासे तीन-दिन रात तक चलते रहे। ब्रह्मदत्त को प्यास लग गई। उसने कहा—
मित्र ! अब तो मुझसे एक कदम भी नहीं चला जा रहा है, प्यास से गला सूख रहा है।
कुमार, आप यहीं रुकिये। मैं पानी लेकर आता हूँ
ब्रह्मदत्त को वहीं बैठाकर वरधनु पानी की खोज में चला गया।
पानी की खोज में इधर-उधर घूमते वरधनु को दीर्घराज के सैनिकों ने आकर घेर लिया।
बताओ कुमार कहाँ है?
मुझे नहीं पता, मैं भी कुमार को खोज रहा हूँ।
सैनिकों ने उसे पकड़कर खूब पीटा। वरधनु जोर से चिल्लाने लगा—
कुमार ! भाग जाओ। इन दुष्ट सैनिकों से अपने को बचाओ।

अरे यह तो वरधनु की आवाज है। लगता है सैनिक आ गये? मुझे यहाँ से भाग जाना चाहिये।
ब्रह्मदत्त जंगल में से छुपता हुआ भाग निकला।
भागता-भागता वह तापसों के एक आश्रम में पहुँच गया। आश्रम के कुलपति ने युवक को इस हाल में देखा तो पूछा—
वत्स ! तुम कौन हो? इतने घबराये हुए क्यों हो?
मैं एक यात्री हूँ। कुछ चोर लुटेरे मेरा पीछा कर रहे हैं।
ब्रह्मदत्त ने उन्हें अपना असली परिचय नहीं दिया।
तभी कुलपति ने उसकी छाती पर श्रीवत्स का चिन्ह देख लिया, उसने मुस्कराकर कहा-
आप सामान्य यात्री नहीं, कोई तेजस्वी होनहार युवक हैं। निर्भय होकर अपना परिचय बताइये—हम आपकी सहायता करेंगे।
कुमार ने कहा—
आचार्य, मैं कम्पिलपुर के स्वर्गीय महाराज ब्रह्म का पुत्र हूँ। दुश्मन मेरा पीछा कर रहे हैं?
कुलपति ने कुमार को छाती से लगा लिया—
ओह ! तुम कुमार ब्रह्मदत्त हो? तुम्हारे पिता तो मेरे घनिष्ट मित्र थे....

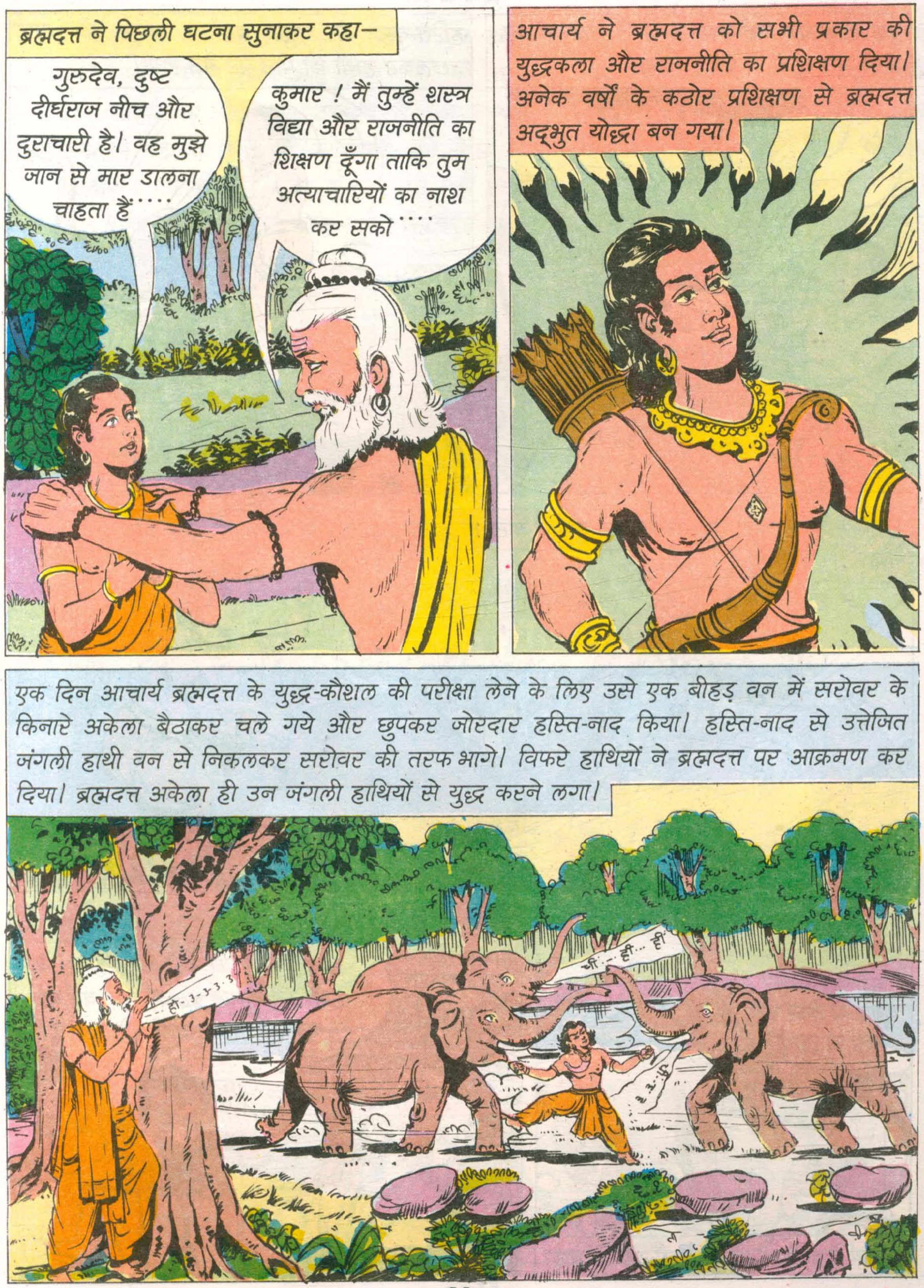
ब्रह्मदत्त ने पिछली घटना सुनाकर कहा–
गुरुदेव, दुष्ट दीर्घराज नीच और दुराचारी है। वह मुझे जान से मार डालना चाहता है....
कुमार ! मैं तुम्हें शस्त्र विद्या और राजनीति का शिक्षण दूँगा ताकि तुम अत्याचारियों का नाश कर सको....
आचार्य ने ब्रह्मदत्त को सभी प्रकार की युद्धकला और राजनीति का प्रशिक्षण दिया। अनेक वर्षों के कठोर प्रशिक्षण से ब्रह्मदत्त अद्भुत योद्धा बन गया।
एक दिन आचार्य ब्रह्मदत्त के युद्ध-कौशल की परीक्षा लेने के लिए उसे एक बीहड़ वन में सरोवर के किनारे अकेला बैठाकर चले गये और छुपकर जोरदार हस्ति-नाद किया। हस्ति-नाद से उत्तेजित जंगली हाथी वन से निकलकर सरोवर की तरफ भागे। विफरे हाथियों ने ब्रह्मदत्त पर आक्रमण कर दिया। ब्रह्मदत्त अकेला ही उन जंगली हाथियों से युद्ध करने लगा।

एक भीमकाय मदोन्मत्त हाथी ने ब्रह्मदत्त पर तीखे दंत शूलों से प्रहार किया।
ची-ची-ऽ-ऽ-ऽ
हस्ति-युद्ध में चतुर ब्रह्मदत्त लंगूर की तरह उछलकर हाथी की पीठ पर बैठ गया।
ची-ची…
हाथी के कुंभ स्थल पर उसने एक मुक्का मारा तो हाथी दर्द के मारे चिंघाड़ता हुआ जंगल में भाग गया।
आचार्य देखते रह गये–
अरे ! अनर्थ हो गया ! मदोन्मत्त गजराज कुमार को लेकर कहाँ भागा जा रहा है?
आचार्य ने तपस्वियों को कुमार की खोज में भेजा।
परन्तु सभी निराश होकर लौट आये। आचार्य निराश होकर बोले–
शायद् भाग्य को यही मंजूर होगा। वैसे भी अब कुमार ब्रह्मदत्त एक वर्ष बाद चक्रवर्ती सम्राट बनने ही वाला है।

उस मदोन्मत्त हाथी ने ले जाकर कुमार को एक उद्यान में छोड़ दिया। कुमार ने सरोवर में स्नान किया। फल तोड़कर खाये और आगे नगर की तरफ चल पड़ा। वह जहाँ भी जाता लोग उसकी अद्भुत तेजस्विता और अपार सौन्दर्य को देखकर चकित हो जाते। उसका युद्ध-कौशल, वीरता और दूसरों की सहायता करने की परोपकारी वृत्ति से प्रभावित होकर अनेक राजकुमारियों ने उसे पतिरूप में स्वीकार कर लिया। परन्तु कुमार कहीं नहीं रुका। वह सभी को अपना लक्ष्य बताता,—"मुझे शक्ति, सेना, और धनबल जुटा कर कम्पिलपुर का राज्य प्राप्त करना है। जब तुम्हें सूचना मिले, मेरी सहायता के लिए आ जाना।"

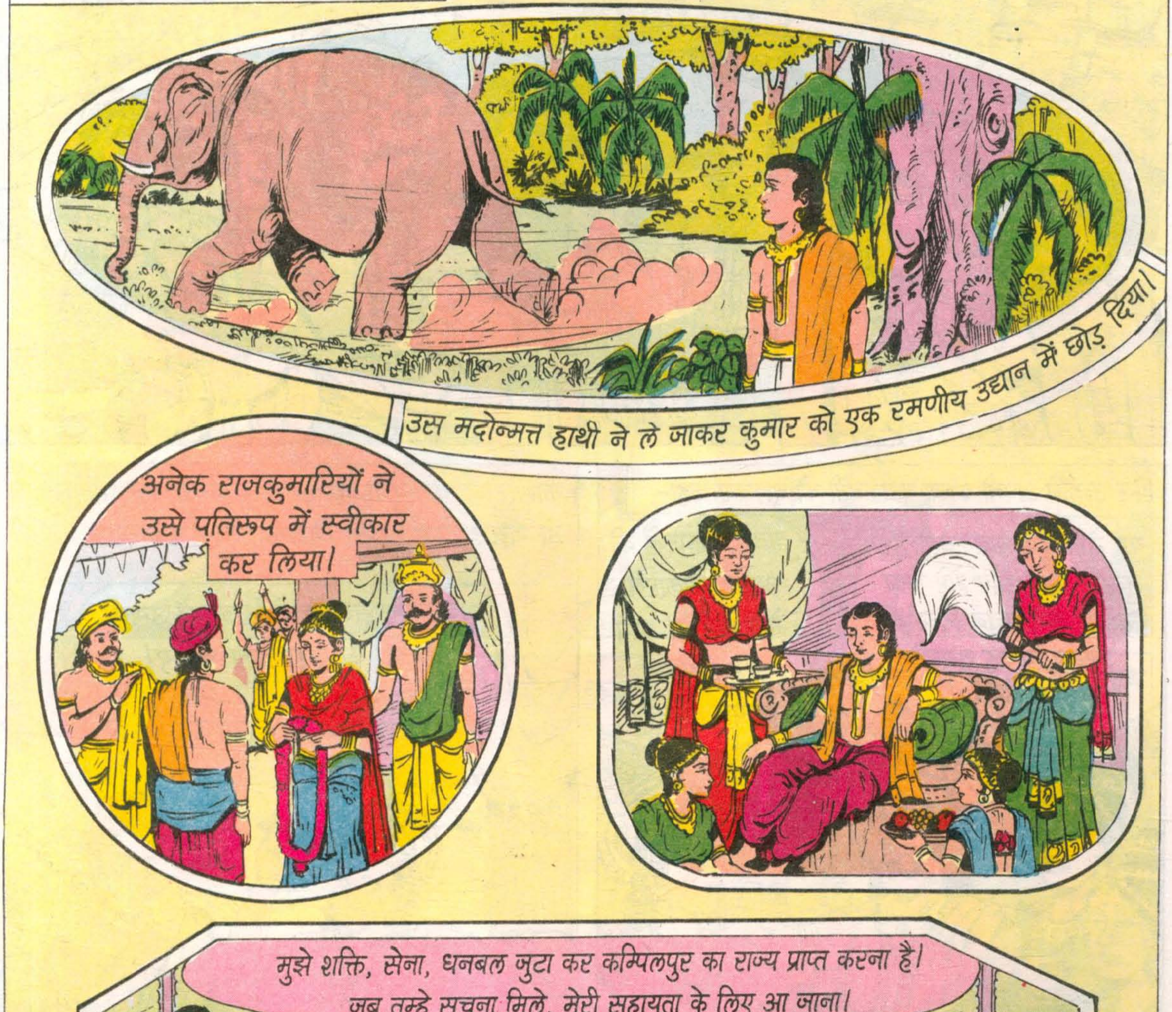

एक दिन ब्रह्मदत्त घूमता-घूमता काशी पहुँच गया। ब्रह्मदत्त के आने की खबर सुनकर स्वयं काशीराज स्वागत सत्कार के लिए नगर के बाहर आये। काशीराज उसके तेजस्वी रूप और सैन्यबल को देखकर गद्‌गद् हो गये। ब्रह्मदत्त ने उन्हें दीर्घराज के षड्‌यन्त्रों की कहानी सुनाकर कहा–
तात ! अब उस दुष्ट के पापों का घड़ा भर गया है। जब तक मैं उस दुराचारी का विनाश नहीं करूँगा, चुप नहीं बैठूँगा।
कुमार ! यह सब तो आपके बांये हाथ का खेल मात्र है। परन्तु युद्ध से पहले शुभकार्य भी होना चाहिए।
फिर उन्होंने अपनी कन्या कनकवती को बुलाकर कहा–
यह मेरी पुत्री कनकवती है। तुम्हारे पिता और मेरे मित्र ब्रह्म को मैंने वचन दिया था, इसका विवाह तुम्हारे साथ करूँगा।
तात ! गुरुजनों की आज्ञा स्वीकारना मेरा धर्म है। आप यह शुभकार्य सम्पन्न कीजिये।
महामंत्री धनु और उसका पुत्र वरधनु भी ब्रह्मदत्त के विवाह की सूचना पाकर काशी आ पहुँचे।
काशीराज की पुत्री के साथ ब्रह्मदत्त का पाणिग्रहण हो गया। फिर सबने मिलकर निर्णय किया–
अब विश्वासघाती दीर्घराज को उसकी दुष्टता का दण्ड देना चाहिए।

ब्रह्मदत्त ने दीर्घराज के पास अपना दूत भेजा। दूत ने आकर दीर्घराज से कहा–
स्वर्गीय महाराज ब्रह्म का यह राज्य आपके पास धरोहर के रूप में था। आपने इसकी रक्षा करने के बदले इसे ही हड़प लिया। अब आप कुमार ब्रह्मदत्त को राज्य सौंपकर उनसे क्षमा माँग लो।
अहंकारी दीर्घराज गुस्से से बोला–
राज्य भिक्षा में नहीं मिलता, जिसकी भुजाओं में बल है, वही राज्य लक्ष्मी का उपभोग कर सकता है।
आखिर ब्रह्मदत्त और दीर्घराज की सेनाओं में घनघोर युद्ध हुआ। ब्रह्मदत्त अद्भुत पराक्रमी तो था ही, न्याय नीति का बल भी था उसके साथ। उसने दीर्घराज की सेना को छिन्न-भिन्न कर दिया।
क्रुध दीर्घराज ब्रह्मदत्त के साथ मल्ल-युद्ध करने लगा।

तभी एक दिव्य चक्र अग्नि की चिनगारियाँ छोड़ता हुआ आकाश से नीचे उतर कर ब्रह्मदत्त की प्रदक्षिणा करने लगा।
ब्रह्मदत्त ने दायें हाथ की तर्जनी ऊपर उठाई। चक्र घूमता हुआ उस पर आकर बैठ गया।
ब्रह्मदत्त ने चक्र को खूब जोर से घुमाकर दीर्घराज की तरफ फैंका।
जाओ ! उस पाप व अनीतियों के उत्पत्ति केन्द्र को काट डालो !
घूमता हुआ चक्र दीर्घराज के मस्तक पर गिरा और दीर्घराज का धड़ कटकर भूमि पर लुढ़क पड़ा।

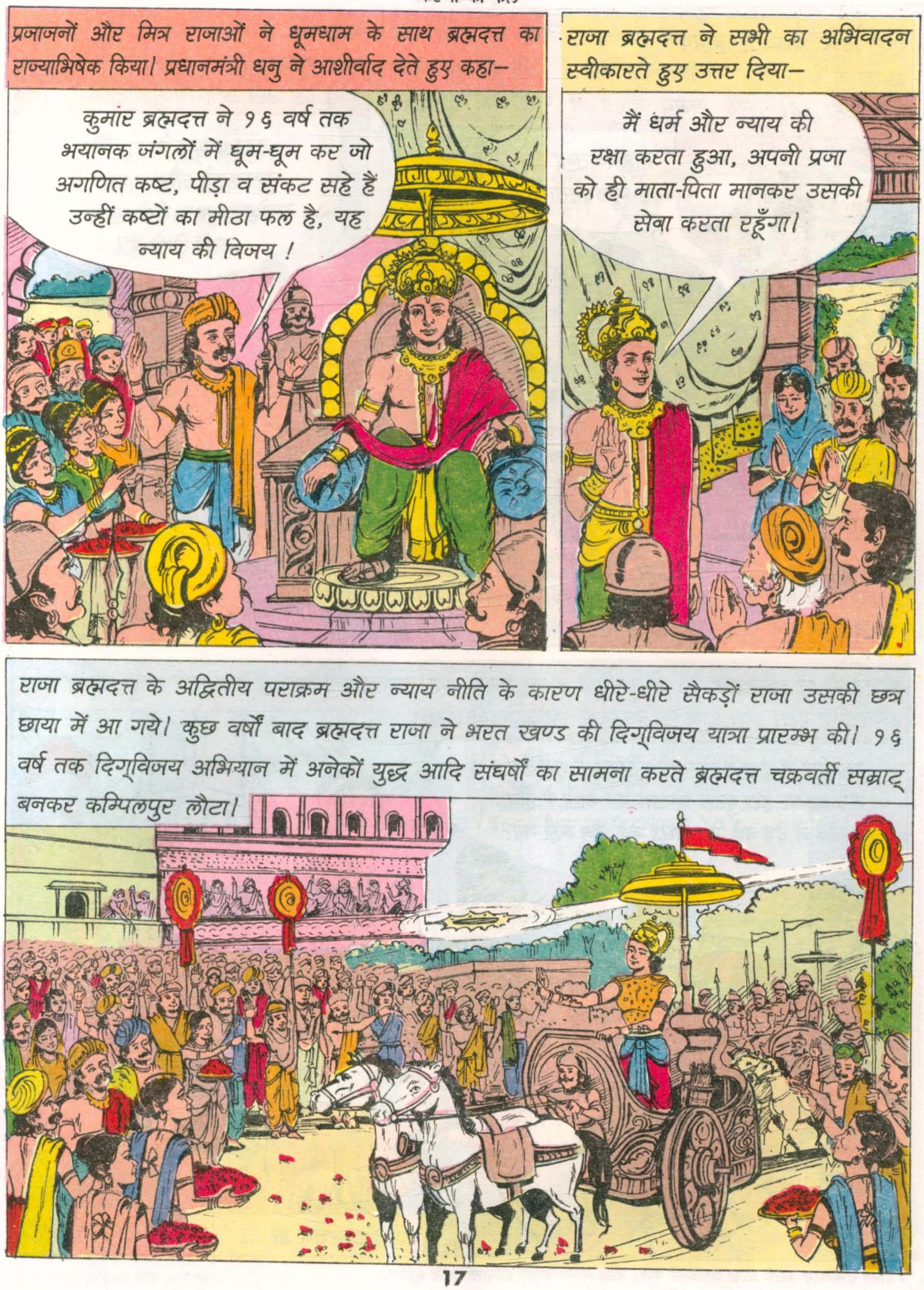
प्रजाजनों और मित्र राजाओं ने धूमधाम के साथ ब्रह्मदत्त का राज्याभिषेक किया। प्रधानमंत्री धनु ने आशीर्वाद देते हुए कहा–
कुमार ब्रह्मदत्त ने १६ वर्ष तक भयानक जंगलों में घूम-घूम कर जो अगणित कष्ट, पीड़ा व संकट सहे हैं उन्हीं कष्टों का मीठा फल है, यह न्याय की विजय !
राजा ब्रह्मदत्त ने सभी का अभिवादन स्वीकारते हुए उत्तर दिया–
मैं धर्म और न्याय की रक्षा करता हुआ, अपनी प्रजा को ही माता-पिता मानकर उसकी सेवा करता रहूँगा।
राजा ब्रह्मदत्त के अद्वितीय पराक्रम और न्याय नीति के कारण धीरे-धीरे सैकड़ों राजा उसकी छत्र छाया में आ गये। कुछ वर्षों बाद ब्रह्मदत्त राजा ने भरत खण्ड की दिग्विजय यात्रा प्रारम्भ की। १६ वर्ष तक दिग्विजय अभियान में अनेकों युद्ध आदि संघर्षों का सामना करते ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती सम्राट् बनकर कम्पिलपुर लौटा।

दासा दसण्णए आसी मिया कालिंजरे णगे। हंसा मयंग तीराए सोवागा दासि भूमिए।
देवा य देव लोयम्मि आसि अम्हे महिड्ढिया....

इमा णो छट्ठिया जाइ अन्नमन्नेण जा विणा

चक्रवर्ती ने प्रसन्न होकर तुरन्त अपने गले का हार, अँगूठी आदि उतारकर माली को पुरस्कार दिया–
तुमने मुझ पर बहुत बड़ा उपकार किया, अब चलो उन मुनि के दर्शन करें। कहाँ है मुनि .... ?
ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती बगीचे में मुनि के दर्शन करने के लिए आया। मुनि को देखते ही ब्रह्मदत्त के हृदय में भाई का प्रेम उमड़ने लगा। वह मुनि के चरणों से लिपट गया।
भाई ! मेरे भाई !
चक्रवर्ती की यह हालत देखकर सभी लोग आश्चर्यचकित हो गये। महारानी ने पूछा–
महाराज ! आपको आज यह क्या हो गया? मुनि के प्रति इतना प्रगाढ़ स्नेह ! ये आपके भाई कैसे हुए।
तुम्हें नहीं मालूम हम पिछले पाँच जन्मों के सगे भाई हैं। हमने पाँच जन्मों तक साथ-साथ सुख-दुःख भोगे हैं।
सभी लोग आश्चर्यचकित होकर पूछने लगे–
महाराज ! यह क्या कहानी है। हमें भी कुछ बताइये !
मेरा हृदय भर रहा है, मैं नहीं बोल सकता, यह कथा तुम मुनिवर के मुख से ही सुनो।

महारानी और महामंत्री आदि ने मुनि से प्रार्थना की। मुनि कहानी सुनाते हैं, "आज से पाँच जन्म पहले की यह कहानी है। दशार्णपुर में एक ब्राह्मण के घर में उसके दासी पुत्र दो भाई थे दिनभर खूब मेहनत मजदूरी करते थे। ......"
एक दिन दोनों भाई खेत पर जुताई कर रहे थे। दिन भर कठोर परिश्रम करने के बाद छोटा भाई बोला–
भैया, मैं तो इतना थक गया हूँ। अब घर तक भी नहीं जा सकता....
चल थोड़ी देर वृक्ष की छाया में सो कर थकावट दूर करते हैं....
दोनों भाई एक वृक्ष के नीचे आकर लेट गये। तभी वृक्ष के कोटर में से एक काला साँप निकला और नींद में सोये दोनों भाइयों को डस लिया। दोनों भाइयों की तत्काल मृत्यु हो गई।
उनकी आत्मा वहाँ से प्रस्थान करके कलिंजर पर्वत के वनों में हरिण के रूप में जन्म लेती हैं।
एक बार दोनों हरिण छोने पानी पीने नदी के तट पर गये, एक शिकारी ने तीर मारकर इनको बींध दिया। दोनों हरिण शिशुओं ने वहीं प्राण त्याग दिये।

दोनों हरिण मरकर गंगा नदी के किनारे हंस बनें। हंसों का सुन्दर जोड़ा सरोवर में क्रीड़ा करता रहता था।
एक बार किसी शिकारी ने जाल फैंका। दोनों हंस उसके जाल में फँस गये।
शिकारी ने बड़ी निर्दयता के साथ दोनों की गर्दन मरोड़ दी, छटपटाते हुए दोनों मर गये।
दोनों हंसों की आत्मा ने वाराणसी में एक चाण्डाल के घर पुत्र रूप में जन्म लिया। बड़े का नाम चित्त और छोटे का नाम संभूत रखा गया।
एक बार वाराणसी के राजा ने उस चाण्डाल को आदेश दिया–
यह पुरोहित नमुचि है हमारा घोर अपराधी। इसे श्मशान में ले जाकर मौत के घाट उतार दो।

श्मशान में नमुचि चाण्डाल के सामने गिड़गिड़ाने लगा–
मुझे मारो मत, तुम जो माँगोगे वही दे दूँगा। कहोगे वही करूँगा।
चाण्डाल ने कुछ विचार किया फिर कहा–
मेरे दो पुत्र मुझे जान से भी ज्यादा प्यारे हैं, तुम इनको संगीत आदि कलाएँ सिखाकर पण्डित बना दो, तो मैं तुम्हे नहीं मारूँगा।
नमुचि दोनों चाण्डाल पुत्रों को नाटक-संगीत आदि कलाएँ सिखाने लगा। दोनों भाई शीघ्र ही पारंगत हो गये।
एक दिन चाण्डाल ने नमुचि को अपनी पत्नी के साथ पापाचार करते देखा। उसे बहुत क्रोध आया। रात को सोये-सोये वह क्रोध में बड़बड़ाने लगा–
नीच, नमुचि ! जिस थाली में खाता है उसी में छेद कर रहा है। कल ही छुरे से इसका सिर उड़ा दूँगा।''
दोनों भाई पिता को क्रोध में बड़बड़ाता सुनकर काँप गये। उन्होंने जाकर नमुचि को कहा–
गुरु जी, आप यहाँ से भाग जाइये। अन्यथा कल सुबह बापू आपको जान से मार डालेगा।
नमुचि रात को ही घर से भाग गय।
घूमता-घूमता वह हस्तिनापुर के चक्रवर्ती सनत्कुमार की सभा में पहुँचता है। उसकी विद्या और बुद्धिमानी से प्रसन्न होकर चक्रवर्ती ने कहा–
आज से नमुचि राज्य का महामंत्री होगा।

चित्त और संभूत दोनों भाई नगर के चौराहों पर लय ताल पूर्वक गाते-बजाते घूमने लगे। लोग उनकी सुरीली मीठी आवाज सुनकर मस्त हो जाते–
इनके सुर में तो अमृत छुपा है। मन होता है बस सुनते ही रहें, सुनते ही रहें....
आ...उ...उ...
एक बार नगर में बहुत बड़ा मेला लगा। देश-विदेश के संगीत नृत्य में निपुण अनेक संगीतज्ञ आये। दोनों चाण्डाल पुत्र भी उसी मण्डली में घुसकर गाने लगे। लोग उनका स्वर सुनते ही झूमने लगे। तभी कुछ पण्डित लोग हाथों में लट्ठ लेकर आ गये–
अरे ! इस सभा में आकर इन चाण्डाल पुत्रों ने तो हमारा धर्म भ्रष्ट कर दिया। मार-मार कर नगर से भगा दो।
लोगों ने लाठियां, पत्थर, घूँसे, मुक्के मारकर दोनों को लहुलुहान कर दिया।
दोनों भागते-भागते एक सुनसान जंगल में छुप गये। चित्त बोला–
भाई ! ऐसा अपमानित जीवन जीने से तो मरना अच्छा है।
दोनों पहाड़ी पर चढ़कर छलाँग लगाने को तैयार होते हैं। तभी एक तपस्वी दूर से उनको पुकारते हैं–
भद्र ! क्या कर रहे हो? क्यों इस पहाड़ी से कूदकर मरना चाहते हो?

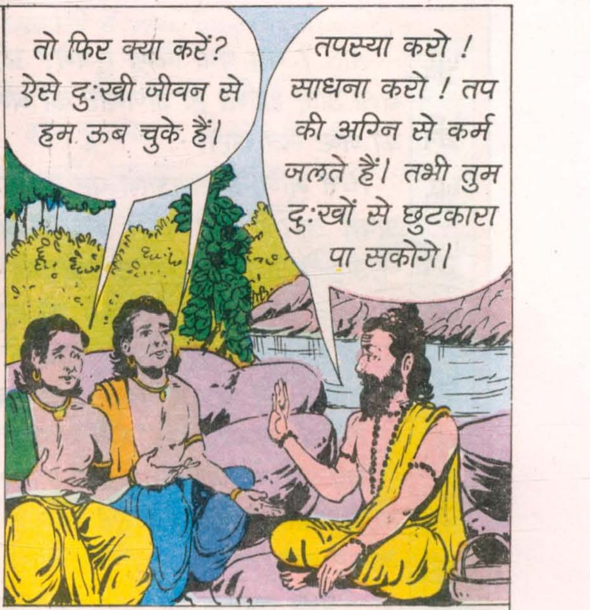

मुनि के बताये अनुसार दोनों भाई साधु बन गये और जंगल में तप-ध्यान करने लगे।

एक बार दोनों मुनि घूमते हुए हस्तिनापुर के बाहर एक बगीचे में आकर तप करने लगे। संभूत मुनि मास खमण के तप का पारणा लेने नगर में गये। राजपुरोहित नमुचि जो भाग गया था और हस्तिनापुर में आकर यहाँ के चक्रवर्ती राजा सनत्कुमार का मंत्री बन गया था उस नमुचि ने संभूत को मुनिवेश में देखकर पहचान लिया–"अरे ! यह तो वही चाण्डाल पुत्र है। कहीं राजा के पास मेरा भेद प्रकट कर दिया तो सारी पोल खुल जायेगी।" मंत्री ने अपने सैनिकों को आदेश दिया–"राजमार्ग पर यह जो साधु घूम रहा है। वह ढोंगी और पाखण्डी है, इसे पकड़कर नगर के बाहर ले जाओ, और मार-पीट कर भगा दो।" राज सेवकों ने तपस्वी संभूत मुनि को रस्सों से, बैंतों से पीटना शुरू किया। मुनि ने शान्तिपूर्वक कहा–भाई ! क्या बात है, मैंने तुम्हारा कोई अपराध नहीं किया। मुझे क्यों मार रहे हो?

राजपुरुषों ने कहा–तुम ढोंगी हो, पाखण्डी हो, तपस्वी के वेश में चाण्डाल हो....

बार-बार रोकने पर भी जब राजपुरुषों ने मुनि को पीटना बन्द नहीं किया तो संभूत मुनि को क्रोध आ गया। उन्होंने कहा–दुष्टों ! मेरी शान्ति और क्षमा को भी तुम कायरता और पाखण्ड समझ रहे हो, ठहरो ! उन्होंने अपना मुँह खोला–मुख से आग की लपटें उगलती हुई तेजोलेश्या प्रकट हुई। क्षण भर में आकाश धुएँ से भर गया। राजसेवक डरकर भाग गये। परन्तु मुनि का कोप शान्त नहीं हुआ। उनके मुख से धुएँ के गुब्बारे निकलकर पूरे नगर पर छा गये। नगरवासी चीखने चिल्लाने लगे–हाय, क्या हुआ? दम घुट रहा है। यह धुआँ कहाँ से आ रहा है?

(मैं) चित्त मुनि भी वहीं पर ध्यान कर रहा था। आकाश में उठती अग्नि ज्वालाएँ और धुएँ का गुब्बार देखता रहा। मैं शीघ्र ही संभूत मुनि के पास आया–

–भ्रात ! यह क्या किया तुमने? क्रोध में आकर अपनी तपस्या का धुआँ मत उडाओ। क्षमा और शान्ति ही अणगार का धर्म है। क्षमा करो ! शान्त हो जाओ ! क्रोध करके तप को नष्ट मत करो।

चित्त मुनि के समझाने पर संभूत मुनि को अपने किये पर पश्चात्ताप हुआ–भ्रात ! मैं अपने आपको भूल गया। क्रोध में बहक कर अपने तप को नष्ट कर दिया। संभूत मुनि ने अपनी तेजोलेश्या वापस खींचली। कुछ ही देर में धुएँ के गुब्बार शान्त हो गये।

इधर सनत्कुमार चक्रवर्ती को सूचना मिली–"सैनिकों ने एक श्रमण को बहुत मारा है, वे ही मुनि क्रुद्ध होकर नगर को तेजोलेश्या से भस्म कर रहे हैं।

चक्रवर्ती ने पता लगाया–किस दुष्ट ने यह नीच कर्म किया?

सैनिकों ने बताया–"मंत्री नमुचि के आदेश से हमने मुनि को पीटा है।"

चक्रवर्ती ने क्रोधित होकर आदेश दिया–इस दुष्ट को रस्सों से बाँधकर चोर की तरह नगर में घुमाकर मेरे सामने लाओ ! फिर उसने दुष्ट नमुचि को मुनि के सामने लाकर खड़ा किया–

– पूज्य तपस्वी जी,–आपका अपराधी सामने खड़ा है, आज्ञा दीजिये इसे क्या दण्ड दूँ?

नमुचि गिड़गिड़ाकर संभूत मुनि के चरणों में झुक गया–"क्षमावीर ! मुझ अपराधी को क्षमा दो ! मेरी नीचता माफ करो।"

संभूत मुनि बोले–"राजन् ! अपराधी पर क्षमा करना ही मुनि का धर्म है। इसे मुक्त कर दो।"

चक्रवर्ती मुनि की क्षमाशीलता पर बहुत प्रसन्न हुआ। वह भक्ति पूर्वक मुनि की वन्दना करने लगा।

सनत्कुमार चक्रवर्ती का विशाल राज परिवार, सुन्दर रमणियाँ आदि अपार वैभव देखकर संभूत मुनि का मन चंचल हो उठा। उन्होंने मन ही मन संकल्प कर लिया–"यदि मेरी तपस्या का कोई फल हो तो मैं भी अगले जन्म में ऐसे ही विशाल वैभव का स्वामी बनूँ।"

चित्त संभूत दोनों मुनि वहाँ से आयु पूर्ण कर नलिनीगुल्म विमान में देवता बनते हैं। दिव्य देव सुखों का उपभोग करके वहाँ से आयुष्य पूर्ण कर संभूत का जीव कम्पिलपुर के ब्रह्म राजा का पुत्र ब्रह्मदत्त बनता है। मैं (चित्त) पुरिमताल नगर में एक श्रेष्ठी पुत्र बनता हूँ। पूर्वजन्म के तप-ध्यान-साधना के शुभ संस्कारों के कारण मेरा मन सांसारिक विषय-भोगों से विरक्त हो गया। युवावस्था में ही मैं मुनि बन गया। गाँव-गाँव विचरता हुआ इस बगीचे में आया हूँ। माली के मुख से जब ये गाथाएँ सुनी तो मुझे जातिस्मरण ज्ञान हो गया। मैंने अपने पाँचों जन्म देख लिए। तब मैंने माली को यह चौथा पद सुनाया–

"इमाणो छट्ठिया जाइ अण्णमण्णेहि जा विणा।"

पाँच जन्मों तक हम साथ रहे, किन्तु छठे जन्म में दोनों अलग-अलग हो गये।

मुनि के मुख से पाँच जन्मों की कहानी सुनकर सभी लोग चकित हो गये--
कर्मों के कारण जीव कैसे-कैसे सुख-दुःख पाता है ?
ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती ने भाव-विह्वल होकर कहा--
मुनिवर ! यह विशाल ऐश्वर्य आपका ही है, इस युवावस्था में आप भी इसका उपभोग करें। बुढ़ापा आने पर संयम लेकर आत्म-साधना कर लेना....
मुनि ने कहा--
चक्रवर्ती ! तुम जान-बूझकर भूल कर रहे हो। हमने कर्मों के कारण ही पूर्व जन्मों में इतने कष्ट भोगे, उन अशुभ कर्मों का नाश तप के द्वारा ही तो हुआ। अब फिर भोगों में आसक्त होकर हिंसा आदि क्रूर कर्म मत करो...
ब्रह्मदत्त ने कहा--
मुनिवर ! यह तो मैं भी जानता हूँ कि हिंसा आदि का अन्तिम परिणाम दुर्गति ही है, परन्तु....
परन्तु क्या....
मुनिवर ! जैसे हाथी किसी गहरे दल-दल में फँस जाता है, और निकलने का भरसक प्रयत्न करने पर भी वह उस कीचड़ से निकल नहीं पाता, वही दशा मेरी हो रही है।

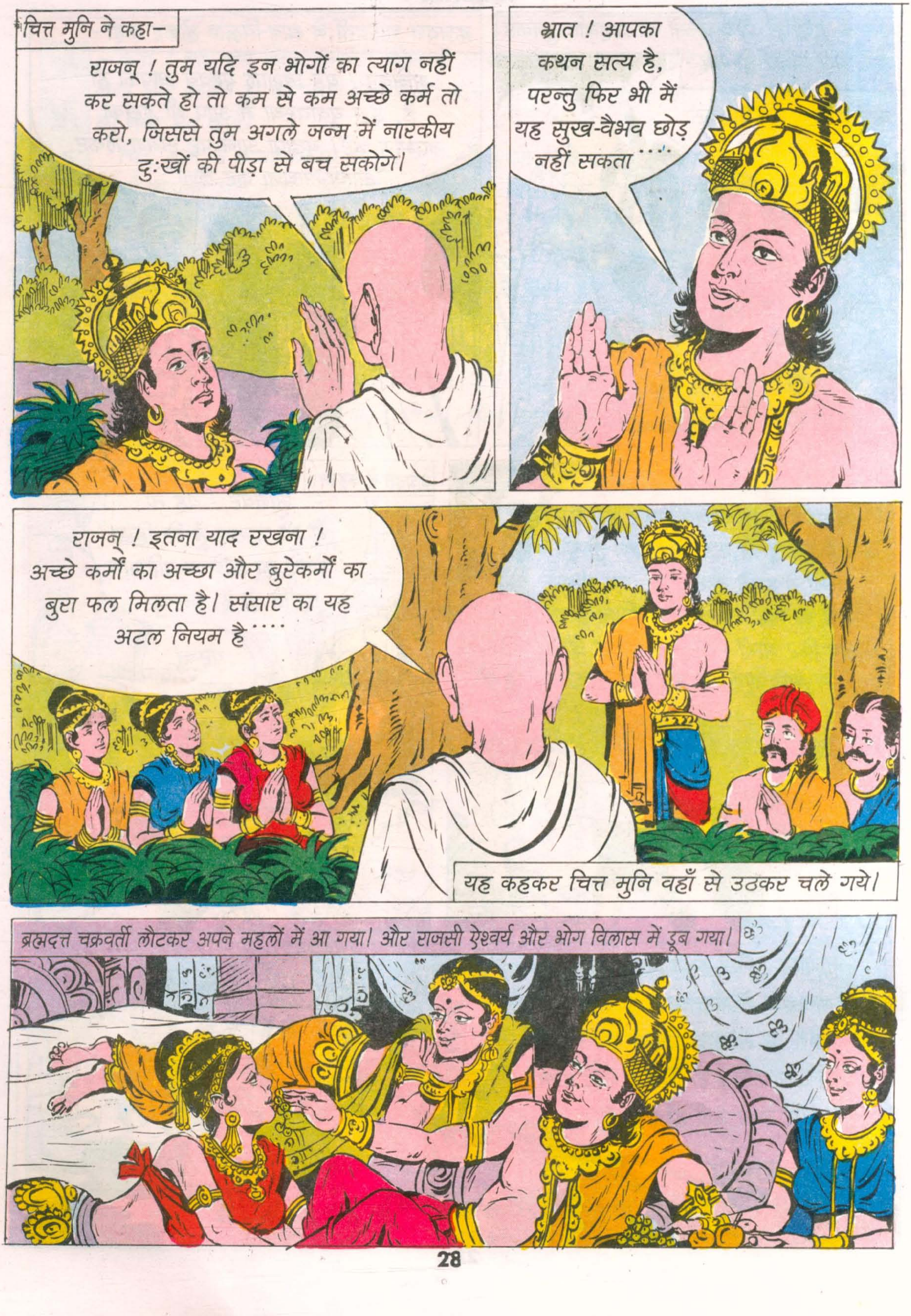
चित्त मुनि ने कहा–
राजन् ! तुम यदि इन भोगों का त्याग नहीं कर सकते हो तो कम से कम अच्छे कर्म तो करो, जिससे तुम अगले जन्म में नारकीय दुःखों की पीड़ा से बच सकोगे।
भ्रात ! आपका कथन सत्य है, परन्तु फिर भी मैं यह सुख-वैभव छोड़ नहीं सकता....
राजन् ! इतना याद रखना ! अच्छे कर्मों का अच्छा और बुरेकर्मों का बुरा फल मिलता है। संसार का यह अटल नियम है....
यह कहकर चित्त मुनि वहाँ से उठकर चले गये।
ब्रम्हदत्त चक्रवर्ती लौटकर अपने महलों में आ गया। और राजसी ऐश्वर्य और भोग विलास में डूब गया।

एक बार ब्रह्मदत्त के पिता का परिचित एक ब्राह्मण राजसभा में आया। ब्राह्मण द्वारा की गई स्तुति से प्रसन्न होकर ब्रह्मदत्त बोला–
विप्रदेव ! आपको क्या चाहिए? जो इच्छा हो माँग लो !
महाराज ! मेरी इच्छा है, आपके लिए जो स्वादिष्ट भोजन बना है, आज पूरे परिवार के साथ मैं वही भोजन करूँ?
चक्रवर्ती ने चकित होकर कहा–
विप्रदेव ! वह भोजन बड़ा गरिष्ट और उत्तेजक है.... आप हजम नहीं कर सकोगे? कुछ और माँग लो।
राजन् ! बस यही मेरी एक इच्छा है।
चक्रवर्ती ने अपने रसोईये को आदेश दिया। ब्राह्मण की पत्नी, पुत्री, पुत्र, पुत्रवधू सभी ने वह अत्यन्त गरिष्ठ भोजन किया–
वाह ! क्या स्वादिष्ट भोजन है !
किन्तु उस गरिष्ठ भोजन के प्रभाव से सभी में भयंकर कामोत्तेजना जाग उठी। पुत्री-पुत्रवधू का शर्म-लिहाज भूलकर सभी पशु की तरह काम-क्रीड़ा करने लगे।

दूसरे दिन जब उस भोजन का नशा उतरा तो ब्राह्मण परिवार को अपने दुराचरण पर बहुत लज्जा आई। ग्लानि से अपना-अपना मुँह छिपाकर सभी जंगल में इधर-उधर भाग गये।
ब्राह्मण को ब्रह्मदत्त पर बहुत क्रोध आया–
इस दुष्ट राजा के दूषित अन्न से मेरे समूचे परिवार की बुद्धि भ्रष्ट हो गई। इसने मुझे पतित और भ्रष्ट कर दिया। मैं उसका बदला लूँगा।
प्रतिशोध की आग में जलते हुए ब्राह्मण ने एक दिन वन में एक गड़रिये को देखा। वह गिलोल से पत्थर के छोटे-छोटे कंकर फेंककर बड़ के हरे-हरे पत्ते नीचे गिरा-गिराकर अपनी बकरियों को चरा रहा था। गड़रिये की अचूक निशाने बाजी देखकर ब्राह्मण सोचने लगा–
इस गड़रिये द्वारा मैं ब्रह्मदत्त से अपने वैर का बदला ले सकता हूँ।
उसने गड़रिये को धन का लालच देते हुए कहा–
देख, छत्र-चमरधारी जो व्यक्ति हाथी की सवारी पर निकले उसकी दोनों आँखें एक साथ फोड़ देना।

भोला गड़रिया ब्राह्मण की बातों में आ गया। जब राजमार्ग से चक्रवर्ती की सवारी निकल रही थी तो उसने निशाना साध कर गिलोल से दो गोलियाँ फेंकी और चक्रवर्ती की आँखें फोड़ डालीं।
आह...!
सैनिकों ने तुरन्त गड़रिये को पकड़ लिया। पीटने पर गड़रिया बोला–
मुझे मत मारो ! मेरा कोई कसूर नहीं है। मुझे ऐसा करने के लिए उस ब्राह्मण ने कहा था।
गुप्तचरों ने तुरन्त उस ब्राह्मण को पकड़कर चक्रवर्ती के सामने हाजिर किया। क्रुद्ध चक्रवर्ती ने कहा–
दुष्ट ! तू तो साँप से भी ज्यादा नीच निकला, ऐसे नीच विश्वासघाती को कठोर से कठोर दण्ड दो, इसके समूचे परिवार को मार डालो।

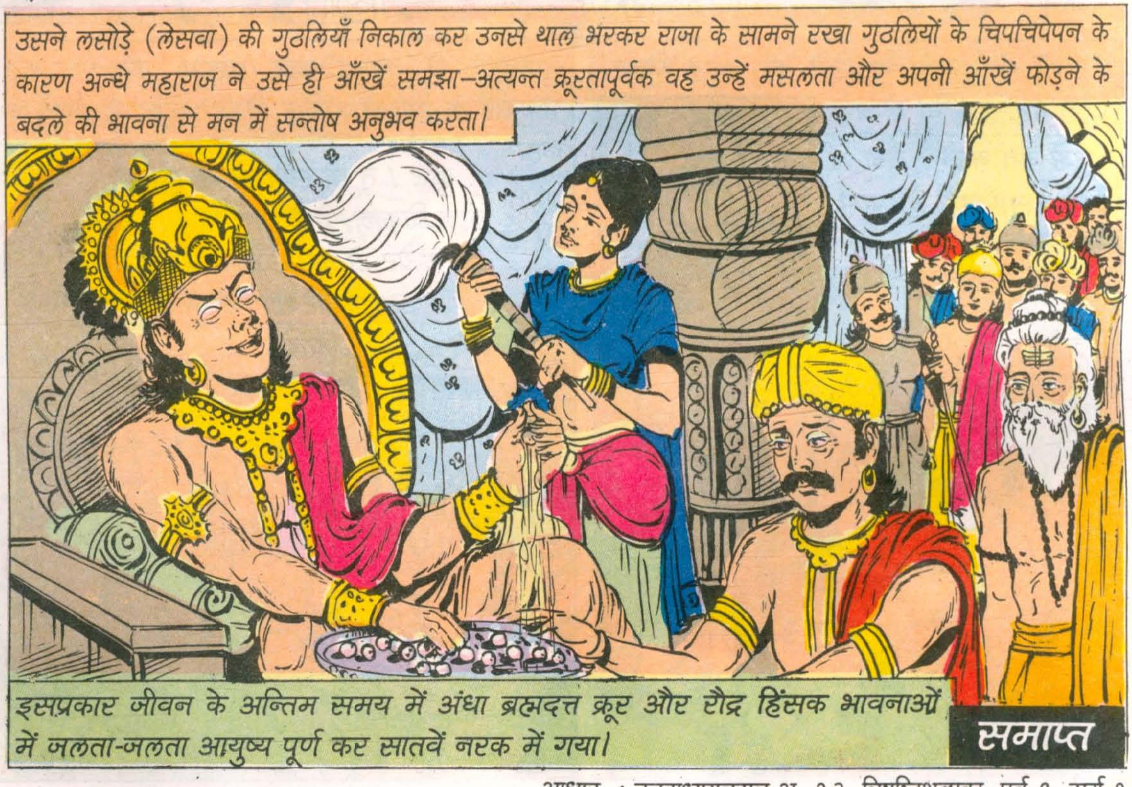

आधार : उत्तराध्ययनसूत्र अ. १२, त्रिषष्टिशलाका. पर्व ९, सर्ग १

भगवान पार्श्वनाथ के प्रगट प्रभावक, असीम आस्थारूप, श्री उवसग्गहरं स्तोत्र की पावन अनुभूति करानेवाला, पोजीटीव एनर्जी के पावरहाउस समान, दिव्य और नव्य

पावनता का प्रतीक - पारसधाम.

- महानगरी मुंबई के हृदय समान घाटकोपर में **पूज्य गुरुदेव श्री नम्रमुनि म.सा.** प्रेरित ज्ञान, ध्यान और साधना का एक अनोखा आधुनिक तकनीकीं द्वारा तैयार किया गया धाम... पारसधाम..!
- पारसधाम... एक ऐसा धाम, जहाँ परमात्मा पार्श्वनाथ के दिव्य परमाणु और पूज्य गुरुदेव की अखंड साधना शक्ति के अध्यात्मिक Vibrations प्रतिपल प्रेरणा के साथ परम आनंद और परम शांति की अनुभूति कराता है।
- यहाँ मानवता की सपाटी से अध्यात्म के मोती तक की गहराई मिलती है।
- यहाँ है महाप्रभावक श्री उवसग्गहरं स्तोत्र की प्रभावक सिद्धीपीठिका जो मनवांछित फल देती है..!
- यहाँ है ऐसी कक्षाएं जहाँ Look n Learn के बच्चे अध्यात्म ज्ञान प्राप्त करते हैं।
- यहाँ है अध्यात्म ध्यान साधना की शक्ति का प्रतीकरूप पीरामीड साधना केन्द्र।
- यहाँ है शांतिपूर्ण विशाल प्रवचन कक्ष जहाँ संतो के एक एक शब्द अंतर को स्पर्श करते हैं।
- यहाँ है स्पीरीच्युअल शोप जहाँ उपलब्ध है अध्यात्म ज्ञान, साधना और प्रवचन आदि की पुस्तकें और C.D., V.C.D.
- यहाँ है एक अति आकर्षक आर्ट गैलेरी जहाँ आगम के रंगीन चित्रों की प्रदर्शनी आपके दर्शन को शुद्ध कर देगी।

महाप्रभावक श्री उवसग्गहरं पार्श्वनाथ परमात्मा की स्तुति के अखंड आराधक **पूज्य गुरुदेव श्री नम्रमुनि म.सा.** की साधना के तरंगो से समृद्ध पारसधाम अध्यात्म की आत्मिक अनुभूति करानेवाला आधुनिक धाम है जो जैन समाज की उन्नति और प्रगति के लिए एक अनोखी मिसाल है।

यहाँ के नीति और नियम भी अपने आपमें विशेष महत्त्व रखते हैं।

यहाँ आनेवाली व्यक्ति को गुरुदर्शन और गुरुवाणी के लिए प्रथम 10 मिनिट ध्यान कक्ष में ध्यान साधना करके अपने मन और विचारों को शांत करना जरूरी है। तभी गुरुवाणी अंतरमे उतरेगी...!

मौन, शांति और अनुशासन यहाँ के मुख्य नियम हैं। यहाँ आनेवाले भक्तों का अनुशासन ही उनकी अलग पहचान है।

पारस के धाम में पारस बनने के लिए आईए पारसधाम..!

PARASDHAM

Vallabh Baug Lane, Tilak Road, Ghatkopar (E), Mumbai - 400 077. Tel : 32043232.

पूज्य गुरुदेव श्री नम्रमुनिजी म.सा. की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से प्रकाशित

सचित्र बाल Magazine

Look n Learn (पाक्षिक)

दस वर्षीय
सदस्यता शुल्क
500 रुपये

प्रत्येक अंक अपनी एक मौलिक विशेषता के साथ प्रकाशित किया जाता है।

आज के बच्चे जो इंग्लिश माध्यम में पढ़ते हैं और जिन्हें ज्यादातर कार्टून, पिक्चर और Computer में ही रस है उनको जैनधर्म का ज्ञान उन्हीं की पद्धति से... उन्हीं की पसंद अनुसार कार्टून पिक्चर द्वारा, इंग्लिश, गुजराती और हिन्दी भाषा में देने के लिए **Look n Learn** बच्चों की एक Magazine हर पंद्रह दिन में प्रकाशित की जाती है।

इस पत्रिका में बच्चों के लिए भगवान महावीर का बोध छोटी-छोटी कहानीयों द्वारा, भगवान का जीवन चरित्र, आगम आधारित कहानीयाँ, रंग भरो प्रतियोगिता, प्रश्न-कसौटी द्वारा ज्ञान, जैनधर्म का तत्त्वज्ञान, जैनधर्म के नियम और पूज्य गुरुदेव की मौलिक और सरल शैली में उनका तार्किक समाधान दिया जाता हैं। साथ में हर अंक में इनाम जीतने का अवसर..!

बच्चों को यह पत्रिका इतनी पसंद है कि वे एक अंक पढ़ने के साथ ही दूसरे अंक की प्रतीक्षा करने लगते हैं।

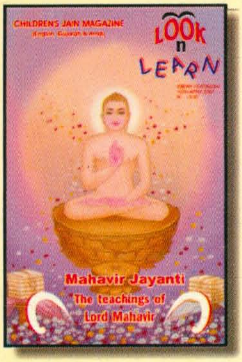

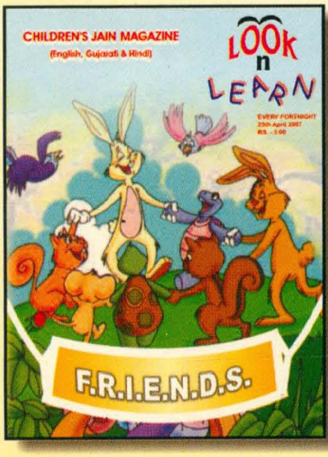

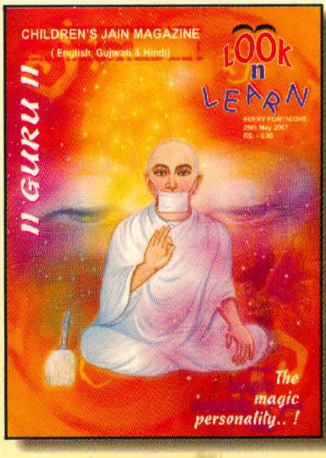

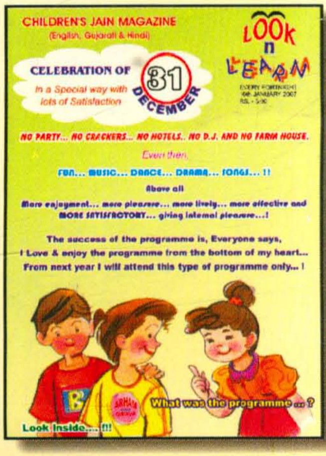

पत्रिका मंगवाने के लिए सदस्यता शुल्क **अर्हम युवा ग्रुप** के नाम से चेक / ड्राफ्ट द्वारा निम्न पते पर भेजे।

LOOK N LEARN : ASHOK R. SHETH, TEL.: 25162440

5, Munisuvrat Ashish Building, cama lane, Ghatkopar (W), Mumbai - 400 086.